मोहन राकेश ने अपने बारे में पूरी ईमानदारी-दबंगई से लिखा : जयदेव

नई दिल्ली (एसएनबी)। साहित्य अकादमी की ओर से आयोजित साहित्योत्सव के पांचवें दिन 'भारत की अवधारणा' पर विचार-विमर्श के साथ ही प्रख्यात लेखक मोहन राकेश एवं कवि गोपालदास नीरज को उनकी जन्मशताब्दियों के अवसर पर याद किया गया। मोहन राकेश जन्मशती संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष माधव कौशिक ने की और बीज वक्तव्य प्रख्यात हिंदी नाट्य समालोचक जयदेव तनेजा ने दिया। इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने मोहन राकेश के व्यक्तित्व को बहुआयामी बताते हुए कहा कि उनके लेखन के पुनर्मूल्यांकन की आवश्यकता है।

गोविंद मिश्र ने कहा कि वह पहले ऐसे नाटककार हैं जिनके नाटक, नाटक के स्तर पर सौ फीसदी खरे उतरते हैं। उनके लेखन का द्वंद्व उनके निजी जीवन का भी द्वंद्व है और वह समाज को आँकने के लिए कई सूत्र देता है। मोहन राकेश पर वृहद काम कर चुके जयदेव तनेजा ने कहा कि एक लेखक के रूप में मोहन राकेश हिंदी साहित्य के सबसे ज़्यादा एक्सपोस्ड लेखक हैं। उन्होंने अपने बारे में पूरी ईमानदारी और दबंगई से लिखा और स्वीकार किया। माधव कौशिक ने कहा कि उनके व्यक्तित्व के बजाय हमें उनके लिखे हुए को पढ़ना चाहिए और उसपर बात करनी चाहिए। अपनी सृजनात्मकता को बचाए रखने के लिए उन्होंने अपने जीवन में कभी भी किसी बेताल को अपने कंधे पर बैठने नहीं दिया।

मोहन राकेश के नाट्य साहित्य सत्र की अध्यक्षता करते हुए एम.के. रैना ने कहा कि मोहन राकेश ने थियेटर की आत्मा को पकड़ा और उसकी भाषा ही बदल दी। आशीष त्रिपाठी ने कहा कि वे अपने नाटकों को एक डिजाइनर की तरह सोचते हैं। उनके नाटकों की भाषा अभिनेताओं के लिए बहुत बेहतर करने के नए आयाम खोलती है। देवेंद्र राज अंकुर ने उनके व्यक्तित्व और साहित्य को एक सा मानते हुए कहा कि वे अपने नाटकों में कहानी ही कहते है और अपने जीवन के कई हिस्सों का वास्तविक चित्रण करते हैं।

■ गोपालदास नीरज बेमिसाल गीतकार थे : बालस्वरूप राही

गोपालदास नीरज की जन्मशती पर 'कवि नीरजः अप्रतिम रोमांटिक दार्शनिक' शीर्षक से हुई परिचर्चा की अध्यक्षता प्रख्यात गीतकार बालस्वरूप राही ने की और इसमें उनके पुत्र मिलन प्रभात गुंजन के साथ ही अलका सरावगी, निरुपमा कोतरू और रत्नोत्तमा सेनगुप्ता ने हिस्सा लिया। 'कथासंधि' के अंतर्गत प्रख्यात हिंदी कथाकार जितेंद्र भाटिया का कथा-पाठ भी संपन्न हुआ।